International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बहुविषयक शिक्षा को विद्यार्थियों के भविष्य पर प्रभाव

डॉ शिवाली शाक्या, सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य, शा. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल

शोध सारांश

बहुविषयक शिक्षा वह होती है जो विद्यार्थियों को एक ही विषय पर बहुत सारे दृष्टिकोण से समझाती है। इसका प्रयोग तभी सार्थक है जबकि इसे सही रूप में प्रयोग किया जाए। यदि सभी विषयों एक साथ पढ़ाया जाए एवं किसी भी विषय पर संपूर्ण ध्यान न दिया जाए तो यह अधूरी शिक्षा विद्यार्थियों के सामने बहुत बड़ी चुनौती भी खड़ी कर सकती है। बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को सार्थकता प्रदान करती है, उसे विभिन्न विषयों में तालमेल या सामंजस्य बैठाने में मदद करती है। इससे विद्यार्थियों में सहयोग एवं टीम वर्क की भावना उत्पन्न होती है। विषय का पूर्ण ज्ञान होने से उनमें पूर्ण आत्मनिर्भरता एवं विश्वास आता है। विद्यार्थियों को विषयों का गहन अध्ययन प्राप्त होता है। यदि हम इसका प्रयोग सही ढंग से करें तो हम अपने देश के लिए नवाचार व नई योजनाएं भी बना सकते हैं एवं शोध व विकास हेतु अपना योगदान दे सकते हैं। बहुविषयक शिक्षा को प्रयोग करने के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलू भी है। कहीं तो उसका प्रयोग विद्यार्थियों में पूर्ण समझ उत्पन्न करता है और कहीं उनमें नीरसता, आत्मविश्वास की कमी, अक्षमता और कुशलता आदि चीजें प्रदर्शित होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि बहुविषयक शिक्षा के दोनों पहलुओं को ध्यान में रखते हुए केवल उसे उन्हीं क्षेत्रों में अपनाया जाए जिससे कि विद्यार्थियों को लाभ प्राप्त हो सके। बहुविषयक शिक्षा का सही प्रयोग विद्यार्थियों के साथ - साथ देश को भी उन्नति की और अग्रसर कर सकता है। जितना विद्यार्थी विषय के प्रति सक्षम होगा उतना ही देश आगे तरक्की करेंगा क्योंकि विद्यार्थी ही शोध एवं कार्यकुशलता से देश को आगे ले जा सकते हैं ।

कीवर्डस - बहुविषयक शिक्षा,

परिचय-

बहुविषयक शिक्षा का अर्थ ऐसी शिक्षा से होता है जो एक ही विषय को एक से अधिक दृष्टिकोण से समझाती है । बहुविषयक शिक्षा पाठ्यक्रम एकीकरण की एक विधि है जो विभिन्न विषयों द्वारा किसी विषय या मुद्दों को चित्रित करने के लिये प्रयोग किये जाने विविध दृष्टिकोणों पर प्रभाव डालती है। शिक्षा में एक ही विषय का अध्ययन करने के लिये विभिन्न विषयों का प्रयोग किया जाता है। बहुविषयक शिक्षा में एक ही अवधारणा को एक से अधिक दृष्टिकोण के माध्यम से सीखा जाता है। यह विधि छात्रों को विभिन्न तरीकों से एक ही विषय से संबंधित ज्ञान प्राप्त। करने से मदद करती है। बहुविषयक शिक्षा को एनईपी 2020 पाठ्यक्रम से लागू किया गया है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों की सोच विकसित होती है। वह एक ही विषय को विभिन्न पहलुओं के माध्यम से सीख पाते हैं। आज के इस प्रतिस्पर्धी युग में असीमित शिक्षा को प्राप्त करने के लिए बहुविषयक शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। बहुविषयक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों की सोच एवं समझ में वृद्धि होती है। विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन करके विद्यार्थियों में अपने भविष्य के प्रति उचित समझ विकसित होती हैं और वह विषयों के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलुओं का अध्ययन करने में सक्षम हो जाता है। विद्यार्थियों को अपने

विषय से संबंधित समस्त ज्ञान प्राप्त होता है और वह विषय का पूर्ण अध्ययन करने में सक्षम हो जाता हैं। विषय का पूर्ण ज्ञान विद्यार्थियों की समझ विकसित करता है और उसे अपने भविष्य से संबंधित निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य किसी विषय या समस्या को एक से अधिक विषय क्षेत्र के दृष्टिकोण से समझना एवं उसका अध्ययन करना होता है, जिससे छात्रों को व्यापक और गहन ज्ञान प्राप्त होता है। इसका अध्ययन करने से छात्रों में आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान एवं रचनात्मकता जैसे महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने में मदद मिलती है। बहुविषयक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी अपने अध्ययन को विभिन्न दृष्टिकोण से अध्ययन कर अपनी आलोचनात्मक सोच को बढ़ाता है अर्थात विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर वह अपने ज्ञान में वृद्धि कर, अपने विषय को मजबूत बनाकर उसकी सभी गहराइयों को जानकर अपने भविष्य के लिये उपयुक्त कदम उठा सकता है जिससे उसके पास अपने भविष्य को सुरक्षित करने के विभिन्न अवसर उपलब्ध हो जाते हैं और वह उपलब्ध विकल्पों में से अपने लिए सर्वोत्तम एवं कुशल विकल्प का चयन करने में सक्षम हो जाता है। बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को भविष्य के लिए उपयुक्त अवसर चुनने में सहायता प्रदान करती है। इस प्रकार विद्यार्थी के लिए बहुविषयक शिक्षा का ज्ञान प्राप्त करना बहुत अधिक लाभदायक है।

अध्ययन के उद्देश्य-

बहुविषयक शिक्षा का ज्ञान प्राप्त करना विद्यार्थी के जीवन के लिए अति आवश्यक है।
बहुविषयक शिक्षा का विद्यार्थी के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने के उद्देश्य इस प्रकार है –

- बहुविषयक शिक्षा के अर्थ को समझना।
- बहुविषयक शिक्षा का विद्यार्थियों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
- बहुविषयक शिक्षा के महत्त्व का अध्ययन करना।

शिक्षा में बहुविषयक दृष्टिकोण के लाभ

- बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के बीच संबंध स्थापित करने में मदद करती है।
- बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को अपने आसपास की दुनिया को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है।
- बहुविषयक शिक्षा के अध्ययन से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच विकसित होती है, जिससे वह सभी सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं पर विचार करता है।
- बहुविषयक शिक्षा के अध्ययन से विद्यार्थियों का दृष्टिकोण व्यापक होता है।
- बहुविषयक शिक्षा का अध्ययन से विद्यार्थियों में समस्या समाधान की भावना विकसित होती है।
- बहुविषयक शिक्षा के अध्ययन से प्रतिस्पर्धा बढ़ती है।
- बहुविषयक शिक्षा के अध्ययन से विद्यार्थियों में रचनात्मकता आती है।
- एक बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों में बेहतर सहयोग अर्थात काम करने की भावना विकसित करती है।

आज के इस तेजी से बदलते हुए परिदृश्य में विद्यार्थियों को सफलता प्राप्त करने के लिए अब केवल कॉलेज की डिग्री पर्याप्त नहीं है बल्कि तकनीकी प्रगति एवं उद्योगों के बदलते स्वरूपों के साथ बहुविषयक शिक्षा का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है।

बहुविषयक शिक्षा का विद्यार्थियों के जीवन पर प्रभाव-

बहुविषयक शिक्षा ऐसी शिक्षा है जो विषयों को विभिन्न माध्यम से समझाती है परंतु इसका अध्ययन विद्यार्थियों के जीवन पर विभिन्न प्रकार से प्रभाव डालता है। जैसे विषय का गहन अध्ययन विद्यार्थियों को गंभीर बनाता है एवं उनमें

रचनात्मकता, टीम वर्क, सृजनात्मकता, नवाचार एवं शैक्षणिक सफलता की भावना प्रबल होती है। परंतु इसके साथ ही उसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी है जिससे विद्यार्थियों में नीरसता, कुशलता में कमी ,उन्नति में पिछड़ापन ,विषय से भटकाव, आत्मविश्वास की कमी, जटिलता आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बहुविषयक शिक्षा के प्रभावों को निम्नलिखित तरह से समझाया जा सकता है-

बहुविषयक शिक्षा सकारात्मक प्रभाव-

ऐसे प्रभाव जो विद्यार्थियों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं, उन्हें सकारात्मक प्रभाव कहा जाता है। बहुविषयक शिक्षा के प्रयोग से विद्यार्थियों पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

1. व्यापक दृष्टिकोण का विकास – विषय का विविध प्रकार से अध्ययन करने से विद्यार्थियों का दृष्टिकोण व्यापक होता है। वह अपने विषय की गहराइयों को समझता है एवं उनके हर पहलू का गहन अध्ययन करता है। इससे विद्यार्थियों का दृष्टिकोण बहुत व्यापक हो जाता है।
2. आलोचनात्मक सोच में वृद्धि – विभिन्न विषयों के ज्ञान को मिलाकर विषय का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में आंकड़ों का मूल्यांकन करने, तुलना करने , पैटर्न की पहचान करने और विभिन्न विचारों के बीच संबंध स्थापित करने में मदद मिलती है जिससे उसकी आलोचनात्मक सोच में वृद्धि होती है।
3. नवाचार ओर रचनात्मकता - बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के बीच संबंध स्थापित करने और नए विचारों को विकसित करने के लिए बहुत प्रोत्साहित करती है, जिससे विद्यार्थियों में नयी चीजें सोचने एवं समझने तथा नए तरीके का प्रयोग करने में मदद मिलती है। इससे विद्यार्थियों में रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहन मिलता है।
4. आलोचनात्मकता एवं समस्या समाधान कौशल में वृद्धि- बहुविषयक शिक्षा का अध्ययन छात्रों को विभिन्न दृष्टिकोणों और तरीकों से अवगत कराता है। विभिन्न विषयों का विभिन्न तरीको से अध्ययन करने के पश्चात विद्यार्थियों में आलोचनात्मक अध्ययन करने का बढ़ावा मिलता है। साथ ही वह विषय से संबंधित विभिन्न समस्याओं का समाधान भी ढूंढ लेते हैं। जिससे उनका कौशल विकास होता है।
5. सहयोग और संचार कौशल - बहुविषयक शिक्षा छात्रों को विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के साथ मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करती है जिससे उनके सहयोग और संचार कौशल में भी वृद्धि होती है।
6. आत्मविश्वास से वृद्धि - बहुविषयक शिक्षा के माध्यम से अध्ययन करने से विद्यार्थियों को विषय से संबंधित समस्त ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं। वह विषय की गहराइयों को अच्छे से समझ पाता है और गहन अध्ययन कर विषय का संपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेता है। जिससे विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।
7. तनाव में कमी- जब विद्यार्थियों को विषय संबंधित पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है जिससे उन्हें बेहतर तरीके से सीखने में मदद मिलती है क्योंकि वह विभिन्न विषयों के बीच संबंध स्थापित करना सीख लेते है। बहुविषयक शिक्षा का उपयोग विद्यार्थियों के लिये बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होता है तनाव में कमी होने से वह अपना संपूर्ण ध्यान विषय पर लगा पाते हैं और उसे अच्छे से समझ सकते हैं।
8. शैक्षिक सफलता - बहुविषयक शिक्षा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करती है क्योंकि वे विभिन्न विषयों के मध्य संबंध स्थापित करना सीख जाते हैं।
9. रोजगार के अवसरों में वृद्धि - बहुविषयक शिक्षा के अध्ययन से विद्यार्थियों के सामने रोजगार के विभिन्न अवसर उपलब्ध हो जाते हैं क्योंकि वे अपने विषय को विभिन्न विषयों से संबंध स्थापित करते हैं। जिससे उन्हें विभिन्न विषयों का अध्ययन हो जाता है। इस प्रकार उनके सामने रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं, जिससे वे स्वयं के लिए योग्य व कुशल विकल्प का चुनाव कर सकते हैं।

10. शोध और विकास में योगदान- जब विद्यार्थी विभिन्न विषयों का एकीकरण कर विषय का अध्ययन करता है तो उसकी यह क्षमता उसे शोध एवं विकास करने में मदद करती है क्योंकि उसके पास विभिन्न विषयों का ज्ञान एवं कौशल होता है जिसे वह शोध एवं विकास कार्यों में प्रयोग कर सकता है एवं देश को उन्नति की ओर आगे ले जा सकता हैं।

बहुविषयक शिक्षा के नकारात्मक प्रभाव

बहुविषयक शिक्षा में एक ही विषय को कई विषयों के साथ तालमेल बैठाकर पढ़ाया जाता है, जिसके कारण विद्यार्थियों पर कुछ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ते हैं जैसे- किसी एक विषय का गहराई से अध्ययन न हो पाना, विभिन्न विषयों के बीच तालमेल न हो पाना, जटिलता, समय की कमी, मूल्यांकन का अभाव, विशेषज्ञता में कमी, विद्यार्थियों की रुचि में कमी।बहुविषयक शिक्षा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को इस प्रकार से समझाया जा सकता है-

1. विभिन्न विषयों के मध्य संबंधों में कमी - बहुविषयक शिक्षा में एक ही विषय को कई दृष्टिकोण से विद्यार्थियों को पढ़ाया जाता है जिससे उनके लिए विभिन्न विषयों के मध्य तालमेल बैठना मुश्किल हो जाता है एवं वह विषय का गहराई से अध्ययन नहीं कर पाता है न ही उनकी सही रूप से तुलना कर पाता है और न ही उचित संबंध स्थापित कर पाता है।
2. समय की कमी - विद्यार्थियों के द्वारा सभी विषयों को समय देना मुश्किल होता है। इस कारण वह एक विषय को पर्याप्त रूप से समय नहीं दे पाता है जिसके कारण किसी भी विषय का संपूर्ण अध्ययन नहीं कर पाता है और न ही किसी भी विषय का संपूर्ण ज्ञान प्राप्त कर पाता है।
3. भ्रमित होना - जब कई विषयों एक साथ पढ़ाया जाता है तो विद्यार्थी भ्रमित हो जाता है और वह किसी भी विषय पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाता है। फलस्वरूप वह विषय में पिछड़ जाता है और उसके पास विषय की गहराइयों को जानने के अवसर भी कम हो जाते हैं।
4. विशेषज्ञता में कमी - बहुविषयक शिक्षा का यह सबसे बड़ा नकारात्मक पहलू है कि सभी विषयों का एक साथ अध्ययन करने से विद्यार्थी किसी एक विषय में विशेषज्ञता हासिल नहीं कर पाता है। उसकी यह कमी उसके लिये रोजगार के साधनों में कमी करती है क्योंकि उसके पास कई विषयों का अधूरा ज्ञान रहता है जिससे उसमें नीरसता भी आती है और वह अपनी अकुशलता का परिचय देता है। उसकी कार्यकुशलता में भी कमी आती है।
5. शिक्षण में चुनौती - कई विषयों का एक साथ अध्ययन करना शिक्षण को चुनौती देना है क्योंकि मानव मस्तिष्क ऐसा होता है जो कुछ बातें याद रखता है तो कुछ भूल जाता है। बहुविषयक शिक्षा में विभिन्न विषयों एक साथ याद रखना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य है।

निष्कर्ष –

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि बहुविषयक शिक्षा की उन क्षेत्रों में अधिक आवश्यकता होती है जहाँ जटिल समस्याओं के लिए बहुआयामी समाधानों की आवश्यकता होती है, जैसे पर्यावरण विज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शहरी नियोजन और अंतर्राष्ट्रीय संबंध जैसे क्षेत्रों में बहुविषयक दृष्टिकोण न केवल लाभदायक है बल्कि आवश्यक भी है। परन्तु जहाँ कंप्यूटर, तकनीक, विज्ञान एवं AI आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है वहाँ बहुविषयक दृष्टिकोण आवश्यक तो है परंतु कई विषय एक साथ पढ़ने पर इन क्षेत्रों में भ्रम पैदा कर सकता है क्योंकि तकनीकी व कंप्यूटर ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ विषय का पूर्ण एवं सही ज्ञान होना आवश्यक है। बहुविषयक शिक्षा छात्रों के लिये भविष्य तैयार करने में मदद करती है जो उन्हें जीवन की चुनौतियों का और समाज में अपना बेहतर प्रदर्शन करने एवं

अपनी आंतरिक क्षमता का उपयोग करने में सक्षम बनाते है। शिक्षा में बहुविषयक दृष्टिकोण को अपनाना सही है क्योंकि बहुविषयक दृष्टिकोण विभिन्न विषयों को मिलाकर एक संपूर्ण शैक्षिक अनुभव प्रदान करता है इससे समझ व नवाचार में सुधार होता है बशर्ते संपूर्ण विषय का गहराई से अध्ययन किया जाए। अन्यथा यह शिक्षा विद्यार्थियों को अक्षम भी बना सकती हैं क्योंकि बहुत सारे विषयों में से किसी एक विषय का गहराई से अध्ययन करना, उसमें भ्रमित न होना व कुशलता हासिल करना ,एक बहुत बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य है। बहुविषयक शिक्षा के माध्यम से हम देश में रोजगार के अवसरों को भी बढ़ा सकते हैं और देश की उन्नति में अपना योगदान दे सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. नई शिक्षा नीति 2020, बहुविषयक शिक्षा, तरुण कुमार ।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बहुविषयक दृष्टिकोण और उसकी प्रासंगिकता, डॉ. सावित्री तड़ागी ,लखनऊ ।
3. नई शिक्षा नीति 2020, का स्वरूप: बहुविषयकता और समग्र शिक्षा, डॉ. अंजू शर्मा एवं डॉ. नीलम।
4. https://ijarsect.co.in
5. https://www.csirs,org.in
6. https://ijcms.2015.co
7. https://nep2020.hinsoli.com
8. https://www.bookshare.org
9. https://www.researchgate.net